हरिजनसेवक

दो आना

भाग १० सम्पादक – प्यारेलाल अंक ४४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ८ दिसम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

मालवीयजी महाराज

अंग्रेज़ीमें अेक कहावत है — "राजा गया, राजा हमेशा जियो!" ठीक यही भारत-भूषण मालवीयजी महाराजके लिअे कहा जा सकता है — "मालवीयजी गये, मालवीयजी अमर हों!" मालवीयजी हिन्दुस्तानके लिअे पैदा हुअे और हिन्दुस्तानके लिअे किये गये अपने कामोंमें जीते हैं। अुनके काम बहुत हैं। बहुत बड़े हैं। अुनमें सबसे बड़ा हिन्दू-विश्व-विद्यालय है। ग़लतीसे अुसे हम बनारस हिन्दू युनिवर्सिटीके नामसे पहचानते हैं। अुस नामके लिअे दोष मालवीयजी महाराजका नहीं, अुनके पैरोकारोंका रहा है। मालवीयजी महाराज दासानुदास थे। दास लोग जैसा करते थे, वैसा वे करने देते थे। मुझे पता है कि यह अनुकूलता अुनके स्वभावमें भरी थी। यहाँ तक कि बाज़ दफ़ा वह दोषका रूप ले लेती थी। लेकिन 'समरथको नहिं दोष गुसाँअी' वाली बात मालवीयजी महाराजके बारेमें भी कही जा सकती है। अुनका प्रिय नाम तो हिन्दू-विश्व-विद्यालय ही था। और यह सुधार तो अब भी करने लायक़ है। अिस विश्व-विद्यालयका हरअेक पत्थर शुद्ध हिन्दूधर्मका प्रतिबिम्ब होना चाहिये। अेक भी मकान पश्चिमके जड़वादकी निशानी न हो, बल्कि अध्यात्मकी निशानी हो। और, जैसे मकान हों, वैसे ही शिक्षक और विद्यार्थी भी हों। आज हैं? प्रत्येक विद्यार्थी शुद्ध धर्मकी जीवित प्रतिमा है? नहीं है, तो क्यों नहीं है? अिस विश्व-विद्यालयकी परीक्षा विद्यार्थियोंकी संख्यासे नहीं, बल्कि अुनके हिन्दूधर्मकी प्रतिमा होनेसे ही हो सकती है, फिर भले वे थोड़े ही क्यों न हों।

मैं जानता हूँ कि यह काम कठिन है। लेकिन यही अिस विद्यालयकी जड़ है। अगर यह अैसा नहीं है, तो कुछ नहीं है। अिसलिअे स्वर्गीय मालवीयजीके पुत्रोंका और अुनके अनुयायियोंका धर्म स्पष्ट है। जगतमें हिन्दूधर्मका क्या स्थान है? अुसमें आज क्या दोष हैं? वे कैसे दूर किये जा सकते हैं? मालवीयजी महाराजके भक्तोंका कर्त्तव्य है कि वे अिन प्रश्नोंको हल करें। मालवीयजी अपनी स्मृति छोड़ गये हैं। अुसको स्थायरूप देना और अुसका विकास करना अुनका श्रेष्ठ स्मृति-स्तम्भ होगा।

विश्व-विद्यालयके लिअे स्व० मालवीयजीने काफ़ी द्रव्य अिकट्ठा किया था, लेकिन बाक़ी भी काफ़ी रहा है। अिस काममें तो हरअेक आदमी हाथ बँटा सकता है।

यह तो हुअी अुनकी बाह्य प्रवृत्ति। अुनका अन्दरूनी जीवन विशुद्ध था। वे दयाके भण्डार थे। अुनका शास्त्रीय ज्ञान बड़ा था। भागवत अुनकी प्रिय पुस्तक थी। वे बाहोश कथाकार थे। अुनकी स्मरण-शक्ति तेजस्विनी थी। जीवन शुद्ध था, सादा था।

अुनकी राजनीतिको और दूसरी अनेक प्रवृत्तियोंको छोड़ देता हूँ। जिन्होंने अपना सारा जीवन सेवाको अर्पित किया था, और जो अनेक विभूतियाँ रखते थे, अुनकी प्रवृत्तिकी मर्यादा हो नहीं सकती। मैंने तो अुनमेंसे चिरस्थायी चीज़ें ही देनेका संकल्प किया था। जो लोग विश्व-विद्यालयको शुद्ध बनानेमें मदद देना चाहते हैं, वे मालवीयजी महाराजके अन्तर-जीवनका मनन और अनुसरण करनेकी कोशिश करें।

श्रीरामपुर, २३-११-'४६ मोहनदास करमचन्द गांधी

लोक-हितको 'लाअिनक्लीयर' दीजिये

जब वाअिसरायको दिल्ली-शिमलासे या जिस किसी जगहसे तार भेजना होता है, तो पहले हुक्म छूटता है — Clear the line: रास्ता साफ़ करो। यानी जहाँ तार भेजना हो, वहाँ तकका प्रजाका और सरकारी हाकिमोंका भी तमाम तार-व्यवहार अेकदम बन्द कर दिया जाता है। वाअिसरायका हक़ पहला; अुनके काममें अेक सेकण्डकी भी देर न होनी चाहिये। तार-खातेकी सहूलियतें प्रजाको अिसी शर्त पर दी गअी हैं कि वाअिसरायका काम सबसे पहले किया जायगा। जब वाअिसराय रेलगाड़ीमें सफ़र करते थे, तब भी अुनकी स्पेशल ट्रेनके लिअे बाक़ीका सारा काम अेक तरफ़ 'शण्ट' कर दिया जाता था।

अिसी तरह लड़ाअीके दिनोंमें फ़ौजी काम सबसे पहले किया जाता है। अिसकी वजहसे जनताके दूसरे काम कितने ही क्यों न बिगड़ते हों, कोअी मुज़ायका नहीं। लेकिन लड़ाअीके दिनोंमें फ़ौजका काम पहले होना चाहिये। अैसे क़ानूनका विरोध भी कैसे किया जाय? लड़ाअीमें जीतने पर सब तरहकी समृद्धि भोगी जा सकती है। लेकिन लड़ाअीमें हारने पर तो सर्वनाश निश्चित है। फिर तो कुछ भी नहीं रहेगा।

लड़ाअीके दिन हों या न हों, जर्मनी में तो फ़ौजी-विभागको ही पहली जगह और पहला महत्त्व दिया गया था; ताकि लोगोंमें लड़ाकू वृत्तिको अिज़्ज़त मिले, और बच्चे भी समझ लें कि अगर जर्मनीको ज़िन्दा रहना है, तो दूसरे सब गुणोंसे पहले अुन्हें लड़ाअीका गुण ही सीखना चाहिये।

अुपनिषदोंमें प्राण और अिन्द्रियोंके बीच अेक बार 'अहंश्रेयसी' चलनेकी कथा कही गअी है। ('अहंश्रेयसी' यानी 'मैं सबसे बड़ा, मैं सबसे बड़ा'का झगड़ा)। सबकी जाँच अिस कसौटी पर हुअी कि सबसे बड़ा वही, जिसके बिना शरीरका काम न चले। जब आँखें अेक सालके लिअे चली गअीं, तो शरीर अंधोंके शरीरकी तरह टिका रहा। अिसी तरह कान कुछ वक़्तके लिअे जाकर वापस आ गये। अुन्होंने भी देखा कि शरीर बहरोंकी तरह काम करता रहा। जीभ, नाक वग़ैरा सभी अिन्द्रियोंने जाकर देखा। मन भी जाकर लौटा। अुस हालतमें भी शरीर तो गुमसुम रहनेवाले पागलकी तरह टिका रहा। आख़ीरमें प्राण ने शरीर छोड़नेकी थोड़ी-सी कोशिश की, अितनेमें तो शरीरके साथ सभी अिन्द्रियाँ घबराने लगीं। सबने अेक साथ पुकारकर कहा — "तू ही हममें सबसे बड़ा है — सबसे श्रेष्ठ है। हम तेरी पूजा करेंगे, तेरा कहा सुनेंगे, तेरी शर्त पर रहेंगे; पर तू शरीर छोड़कर मत जा।"

www.vinoba.in

जब प्राण रहा, तो शरीर टिका और सब अिन्द्रियाँ अपनी-अपनी जगह सुख-चैनसे रहने लगीं।

न जाने कितनी सदियोंसे हिन्दुस्तानकी राज-व्यवस्था, समाज-व्यवस्था और जीवन-व्यवस्था प्रजा-द्रोह यानी प्राण-द्रोह करती आ रही है। और सबोंको खाना मिलता है, किसानों, मजदूरों और कारीगरोंको ही नहीं मिलता। घरमें और सब लोग मौज करते हैं, फ़क़त घर चलानेवाली गृहिणियोंकी यानी औरतोंकी मौत है। मुल्कमें सबकी सुरक्षा या सलामतीका थोड़ा-बहुत बन्दोबस्त है, लेकिन असलमें अिस मुल्कको बसानेवाले यहाँके आदिवासी, आबादीवाले हिस्सोंसे हटते-हटते बनों और जंगलोंमें जा पहुँचे हैं; और अुनकी कअी जातियाँ तो जंगलोंसे भी हटकर कभीकी मौत के मुँहमें पहुँच गअी हैं। शेषनागकी तरह दूसरोंके लिअे समूची धरतीका बोझ ढोनेवाला किसान क़र्ज़ के रसातलमें डूब गया है। अुसकी मेहनत पर सारी प्रजा पल रही है, और अुसे दिन-दिन घटती हुअी अपनी पूँजी पर निभना पड़ता है। राजा और अुसके हाकिम, शहरोंके रहनेवाले और लोगोंके नेता, डॉक्टर, वकील, अिञ्जीनियर, साहूकार, धर्माचार्य — थोड़ेमें, देश-परदेशके सभी सफ़ेदपोश लोग बुरी-से-बुरी हालतको पहुँचे हुअे किसानों और मजदूरोंका ख़ून चूसकर निभते हैं। सरकारके नये-नये टैक्स किसी भी तबक़े या वर्ग पर क्यों न पड़ें, ये चालाक लोग अुनका सारा बोझ अिन ग़रीब किसानों और मजदूरोंके सिर डाल देते हैं। यह प्राणद्रोह अब और नहीं चल सकता। गांधीजी सरमायादारोंसे कहते हैं कि आप लोगोंको भारी-भारी मुनाफ़ा देनेवाले जो भी दूसरे धन्धे करने हों, अुन्हें आप खुशीसे कीजिये। लेकिन जिन धन्धोंके बिना मामूली जनता जी ही नहीं सकती, और जिन धन्धोंको जनता कम-से-कम पूँजी और कम-से-कम लियाक़त या योग्यतासे चला सकती है, अुन व्यापक धंधोंमें आपको हाथ नहीं डालना चाहिये। वहाँ तो आपको आम रिआयाके लिअे 'लाअिनक्लीयर' देना ही होगा। अगर आप अितनी भी धर्म-बुद्धि न रक्खेंगे और प्रजा-प्राणका द्रोह करेंगे, तो पहले प्रजाको और अुसके साथ आपको, यानी दोनोंको, मौतकी शरणमें जाना होगा। कअी अैसे धंधे है, जिन्हें आम रिआया कभी अपना ही नहीं सकती। अैसे धन्धोंको आप या आपकी सरकारें भले शुरू करें। लेकिन जिन धन्धोंको आम लोग कर सकते हैं, या जिन धन्धोंके अभावमें देहातके किसान, मजदूर व कारीगर बेकार रहते हैं, कमजोर बनते हैं, निस्तेज और निर्बुद्ध यानी बेनूर और बे-अक़्ल बनते हैं, वे सब धन्धे आपको अुनके लिअे अछूते रखने चाहियें। यह ग़रीबों पर दया दिखानेकी बात नहीं। भिखारीको दान देनेकी बात नहीं। अकाल-पीड़ितोंको राहत पहुँचानेकी बात भी नहीं। बात है, अुन करोड़ों आम लोगोंके लिअे 'लाअिनक्लीयर' देनेकी, जिनकी सत्ता सबके अूपर है, सार्वभौम है। ये लोग अपना अधिकार नहीं जानते। अपने हितकी बात नहीं समझते। अिन्हें जोंककी तरह कौन, कहाँ और किस तरह चूसता है, अिसकी अिन्हें सूझ नहीं पड़ती। अिन्हें अभी अपनी ताक़तका भान नहीं हुआ, अिसलिअे खुद सच्चे सत्ताधीश होते हुअे भी ये कंगाल बने हुअे हैं। यही वजह है कि गांधीजी अिस सत्ताधीश जनताके स्वयं-नियुक्त और मुफ़्तके सॉलीसिटर बनकर सरमायादारोंको नोटिस देते हैं कि "जहाँ लोग अपनी ताक़त और हैसियतके मुताबिक़ काम कर सकते हैं, वहाँ अुन्हें अपने खादी-प्रधान ग्रामोद्योग करने दीजिये। वहाँ अपनी मिलें ले जाकर ग़रीबोंके हाथसे अुनके धन्धे न छुड़ाअिये। जहाँ खादी तैयार हो सकती है, वहाँ अपने मिलके कपड़ोंका ढेर लगाकर लोगोंका काम और अुनका धन्धा न छीनिये। आपके लिअे चरने-खानेको बहुतसे धन्धे हैं। आप चाहे रेलकी पटरी बनाअिये, ग्रामोफोन और रेडियो बनाअिये, अेंजिन तैयार कीजिये, मोटरें और हवाअी जहाज बनाअिये, मगर लोगोंकी खेती, अुनका बुनाअी-काम, अुनके ग्रामोद्योग और पशुपालन, सारे देशमें फैली हुअी, गाँवों और झोंपड़ोंमें बसनेवाली, जनताके ही हाथमें रहने दीजिये। आप अपने ज्ञान, कौशल और सूझ-बूझसे अुन्हें फ़ायदा पहुँचाअिये, लेकिन आम लोगोंको अेक तरफ़ हटाकर अुनके हाथ और दिमाग़से अुनका काम न छीनिये। जनताको सच्ची तालीम अुसके अपने जीवनसे मिलती है। और अुद्योग-धन्धे ही जिन्दगीकी बड़ी-से-बड़ी प्रवृत्ति हैं। खेती, बुनाअीका काम, दूसरे ग्रामोद्योग, ढोरोंकी और शहदकी मक्खियोंकी परवरिश वग़ैरा जीवनके लिअे अुपयोगी धन्धोंके ज़रिये ही जनताकी जीवन-दायिनी बुद्धिका विकास होता है। आप जीवनका द्रोह करनेवाली अपनी तालीमको गाँव-गाँव पहुँचानेका अुपकार न कीजिये। नअी तालीमका मतलब है, जिन्दगी देनेवाली तालीम; रचनात्मक और सर्जनात्मक बुद्धिकी तालीम; दस अँगुलियोंकी मारफ़त दी जानेवाली बुद्धिकी, हृदयकी और कौशलकी तालीम। अिस तालीमको सारे देशमें फैलाअिये। अिसे प्रधानता दीजिये। अिसे 'लाअिनक्लीयर' देनेके बाद, अिसकी शर्त पर दूसरी सब तरहकी तालीम, दूसरे सब अुद्योग-धन्धे देशमें भले चलते रहें।

गांधीजीने सरकारको, और देशके नेताओं, सरमायादारों और व्यापारियोंको समझानेका रास्ता अख़्तियार किया है। अब वे नअी भाषामें बोलते हैं। वे कहते हैं कि अगर आप धनवान हैं, सत्ताधीश हैं, तो देहातकी जनता संख्याधीश है, परिश्रमाधीश है; और, जब समझ लेगी तब जीवनाधीश भी बन जायगी। अुसका द्रोह करना, अुसे हानि पहुँचाना, आपको पुसायगा नहीं। जनताके धैर्यकी आखिरी हद अब आ पहुँची है। अुसके बिगड़नेसे पहले ही आप समझ जाअिये। जनताके हितको 'लाअिनक्लीयर' दीजिये।

गांधीजी यह भी नहीं कहते कि आप अपनी कपड़ेकी मिलें आज ही तोड़ डालिये। वे अितना ही कहते हैं कि नअी मिलें न खोलिये; जो मौजूद हैं, अुनमें मशीनें वग़ैरा मत बढ़ाअिये, जहाँ खादी चल सकती हो, वहाँ अपना मिलका कपड़ा मत ले जाअिये। जितनी मिलें चलायें, अुतनी खादी-द्रोह, ग्राम-द्रोह और जनता-द्रोह किये बिना चलाअिये। अिस तरह चलनेवाली अपनी मिलोंमें काम करनेवाले मजदूरों और कारीगरोंको सिर्फ़ अुनके गुजारेभरकी नहीं, बल्कि अच्छी तरह जीने लायक़ मजदूरी दीजिये।

गांधीजी सरकारसे और देशनेताओंसे कहते हैं कि जब तक जनताकी क़िस्मत आपके हाथमें है, तब तक अपने सारे काम आप जनताके फ़ायदेके लिअे कीजिये; नहीं तो अेक दिन अैसा आयेगा जब आपकी — हाँ, आपकी — राज करनेवालों और देशनेताओंकी — क़िस्मत जनता अपने हाथमें ले लेगी। बिगड़ी हुअी जनता खुदकुशीके लिअे तैयार होकर ही क्रान्ति या अिन्क़िलाब करती है। अगर यह क्रान्ति अन्धी हुअी तो तक़दीर हम सबकी। बिगड़ी हुअी प्रजा अिसकी परवाह नहीं करेगी। जब सारी जनता बिगड़ खड़ी होगी, तब अुसके तांडव-नृत्यके सामने जमींदार और सरमायेदार, मुस्लिम लीग और हिन्दूसभा, वाअिसराय और गवर्नर सभी काँपने लगेंगे। और अगर आजके छुरीबाज अुस वक़्त तक बचे रहे, तो वे कहाँ जा छिपेंगे, अिसका पता भी न चलेगा।

अिसलिअे गांधीजी कहते हैं कि वक़्त रहते चेत जाअिये। प्रजाके बरबादीका रास्ता अख़्तियार करनेसे पहले ही अुसे रचनात्मक जीवनकी, जीवनदायिनी तालीम दीजिये। लोक-सेवक और राज-सेवक सभी जनताको खादी और ग्रामोद्योगकी कला सिखानेके लिअे तैयार हो जायँ। खुद सीखें और दूसरोंको सिखावें। समूचा राजतंत्र और समाजतंत्र लोक-हितके कामोंमें लग जाय। आज जहाँ वाअिसरायको 'लाअिनक्लीयर' मिलता है, वहाँ प्रजाको 'लाअिनक्लीयर' मिले। और अिस हिसाबसे सब अपनी-अपनी जगह पर जम जायँ।

(गुजरातीसे)

काका कालेलकर

www.vinoba.in

नक़्शा

[पूरबी बंगालका वह हिस्सा जहाँ गांधीजी और अुनके साथी अपना "करेंगे या मरेंगे" मिशन पूरा करनेके लिअे ठहरे हुअे हैं ।]

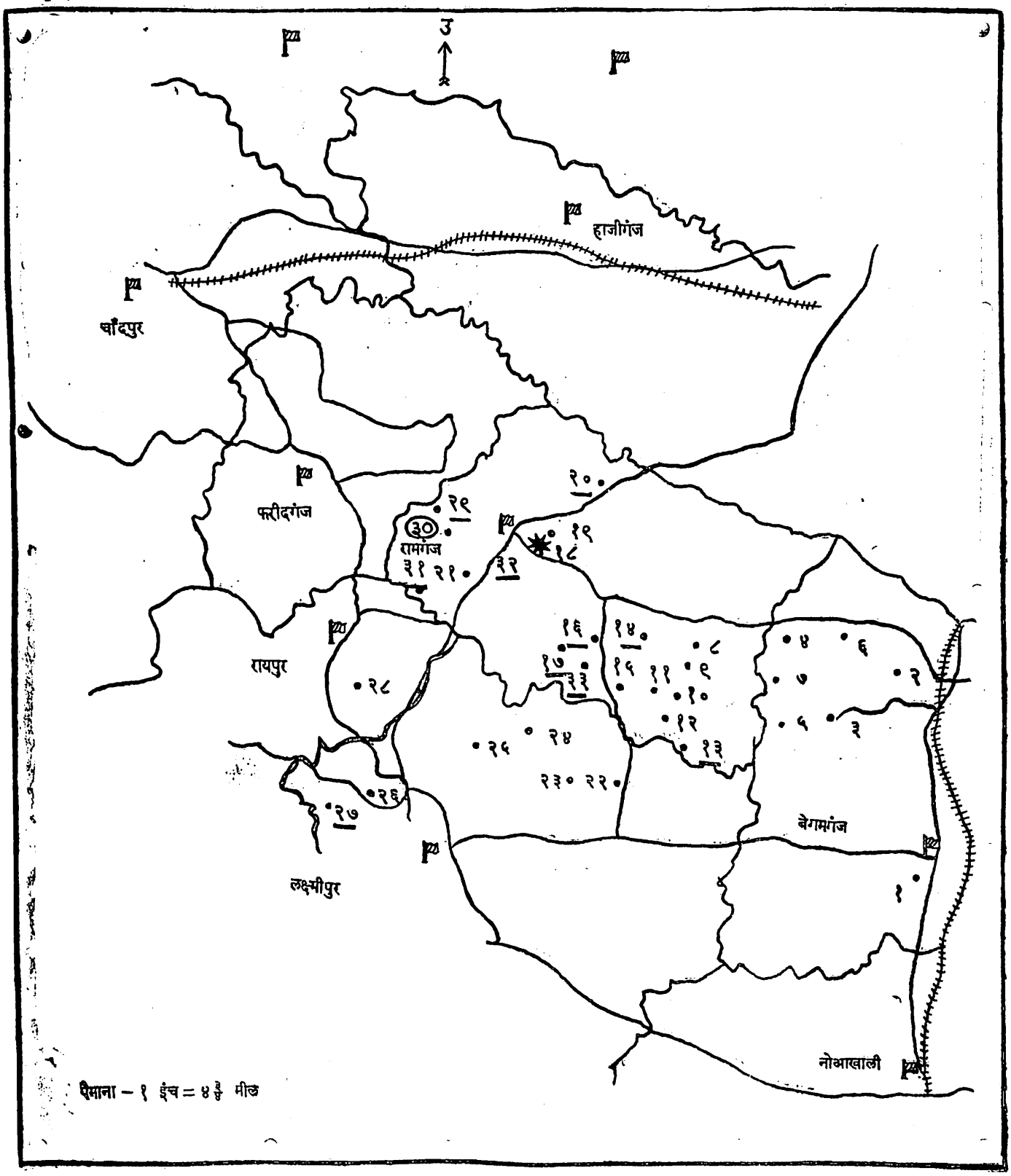

१. चौमुहानी
२. सोनाअीमडी
३. आमिषपाडा
४. जोयाग
५. गोविन्दपुर
६. आमकी
७. नाओडी
८. चाटखिल
९. तबगा
१०. नोआखोला
११. सोनाचक
१२. खिलपाडा
१३. गोमाताली
१४. दशघडिया
१५. गोपाअिरबाग
१६. शाहपुर
१७. करपाडा
*१८. काजीरखिल
१९. नन्दनपुर
२०. पनियाला
२१. चण्डीपुर
२२. दत्तपाडा
२३. बरलिया
२४. नन्दीग्राम
२५. विजयनगर
२६. दलालबाजार
२७. चारमण्डल
२८. शिवपुर
२९. सन्दोरा
O३०. श्रीरामपुर
३१. चंगीरगाँव
३२. अंम्रापाडा
३३. भाटियालपुर

* अिस गाँवसे गांधीजी श्रीरामपुरके लिअे रवाना हुअे थे ।   O श्रीरामपुर, जहाँ गांधीजीका मुक़ाम है ।

काली लकीरवाले गाँवोंमें गांधीजीके साथी अलग-अलग अपना डेरा डाले हुअे हैं ।

हरिजनसेवक

८ दिसम्बर १९४६

'करेंगे या मरेंगे' मिशन

सत्याग्रहके रास्तेमें रुकना मना है, आराम करना मना है। सत्याग्रहीको या तो बराबर आगे बढ़ना है या पीछे हटना है। 'हरिजनसेवक'के पिछले अंकमें गांधीजीके जिस निर्णयको मैंने 'श्रद्धाका साहस' कहा था, वह अुन्होंने दत्तपाड़ामें किया था। किसी जरूरी कामकी वजहसे मुझे दत्तपाड़ा रुक जाना पड़ा। अिस बीच गांधीजी क़ाज़ीरखिल पहुँच गये। दूसरे दिन दत्तपाड़ासे क़ाज़ीरखिल पहुँचते ही मैंने देखा कि गांधीजी अपने निर्णयके सिलसिलेमें अेक क़दम और आगे बढ़ चुके थे। अुन्होंने अपने दिलमें यह तय कर लिया था कि अगर बंगालकी मुस्लिम लीगी सरकारकी सिफ़ारिश और सलाहसे कोअी भले लीगी मेम्बर मुझे अपने घरमें घरके आदमीकी तरह रखनेको तैयार हों, तो मुझे अुन्हींके घर जाकर रहना चाहिये। १६ नवम्बरको बंगाल सरकारके 'सिविल सप्लाअिज़' महकमेके वज़ीर जनाब ग़फ़रान साहब गांधीजीसे मिलने आये थे। गांधीजीने अुनसे अपने अिस निर्णयकी चर्चा की और पूछा — "क्या आप किसीसे मेरी सिफ़ारिश कीजियेगा?" जब ग़फ़रान साहबने सुना कि गांधीजी अपने सभी साथियोंसे अलग होकर अैसे लोगोंके बीच रहना चाहते हैं, जिन्हें अुनकी सार-सँभालका कोअी अिल्म नहीं है, तो वे चौंके। गांधीजीने अुन्हें समझाना शुरू किया — "आप मेरी फ़िक्र न कीजिये। मैं अपना सब काम खुद कर लूँगा। मुझे किसीकी खिदमतकी जरूरत नहीं पड़ेगी।" अिसपर ग़फ़रान साहबने हँसते-हँसते जवाब दिया — "तब तो मुझे कहना चाहिये कि कोअी भी मुसलमान परिवार आपको अपने घर टिकानेके लिअे तैयार न होगा।" लेकिन अिस तरह अपनी बातको टलते या हँसीमें अुड़ते देखकर भी गांधीजी आसानीसे माननेवाले जीव तो हैं नहीं। अुसी दिन शामकी प्रार्थना-सभामें अपने अिस फ़ैसलेको ज़्यादा तफ़सीलके साथ समझाते हुअे अुन्होंने कहा — "यहाँ नोआखालीमें मैं मुस्लिम बस्तीके बीच रहता हूँ, अिसलिअे मुझे यहाँ अपने हिन्दू दोस्तोंके साथ रहना अच्छा नहीं लगता। मुझे देखना है कि मैं किन्हीं मुस्लिम लीगी भाअीके साथ रह सकता हूँ या नहीं। मेरी जरूरतें बहुत कम हैं। मेरे लिअे किसी खास अिन्तज़ामकी भी जरूरत नहीं। अगर मुझे सफ़ाअी, साफ़ पानी, मेरे खाने लायक़ खुराक और अपने ढंगसे अीश्वरकी प्रार्थना करनेकी आज़ादी मिल जाय, तो बस है। मेरा खयाल है कि जब हिन्दू मुझे मुस्लिम लीगी दोस्तके साथ रहते देखेंगे, तो अुनका खोया हुआ विश्वास लौट आयेगा, और वे अुत्साहके साथ वापस अपने-अपने घर जानेको तैयार हो जायँगे। मुस्लिम दोस्त भी मुझे ज़्यादा नज़दीकसे देखकर अिस बातकी जाँच कर सकेंगे कि मैं अुनका दुश्मन हूँ या दोस्त।"

लेकिन अिस तरह किसी मुस्लिम परिवारके तैयार होने तक गांधीजी अपने 'श्रद्धाके नये साहस'को मुल्तवी करनेके लिअे तैयार न थे। अेक दिन बात ही बातमें अुन्होंने कहा — "जब मैं आगाखान महलमें क़ैद था, तब अेक दफ़ा मैंने वहाँ 'अहिंसाका हिमायती हिन्दुस्तान'के नामसे अेक मज़मून लिखना शुरू किया था, लेकिन कुछ दिन लिखनेके बाद मैं आगे न लिख सका। मुझे रुक जाना पड़ा। हिन्दूधर्मके दो पहलू हैं — अेक तरफ़ छुआछूतको अपनानेवाला, अन्धे विश्वासोंकी वजहसे पत्थरों और पेड़ोंकी पूजा-भक्ति करनेवाला, जिन्दा जानवरोंकी कुरबानीके रिवाजको माननेवाला और अैसी ही दूसरी निशानियोंवाला हिन्दूधर्म है; और दूसरी तरफ़ वह हिन्दूधर्म है, जिसकी नसीहतें गीता, अुपनिषद् और पातंजल योगसूत्रमें भरी पड़ी हैं, जो अहिंसा पर और सारी दुनियाकी अेकता पर जोर देता है, और जो सारे विश्वमें फैले हुअे, निराकार, अविनाशी और अेक अीश्वरकी शुद्ध भक्ति करना सिखाता है। जिस अहिंसाको मैं हिन्दूधर्मका मुख्य गौरव समझता हूँ, अुसे हमारे लोग यह कहकर टालना चाहते हैं कि वह तो सिर्फ़ संन्यासियोंके पालनेका धर्म है। मेरी यह राय नहीं। मैं तो शुरूसे यह मानता आया हूँ कि अहिंसा ही धर्म है, वही जिन्दगीका अेक रास्ता है, और सारी दुनियाको यह रास्ता दिखानेका काम हिन्दुस्तानका है। लेकिन सवाल यह है कि अिस बारेमें मैं खुद कहाँ खड़ा हूँ? क्या मुझमें यह अहिंसा है? क्या मैंने अिसे सिद्ध किया है? मैं अिसका प्रतिनिधि हूँ? अगर मैं अहिंसाका सच्चा प्रतिनिधि हूँ, तो मेरी हाजिरीकी वजहसे दंगा, फ़रेब और दुश्मनीकी यह जहरीली हवा साफ़ क्यों नहीं होती? चुनाँचे अपने जिन साथियोंकी मददसे अब तक मैं अपना काम करता आया हूँ, अुनसे अलग होकर अकेला, बैसाखीकी ही मददसे क्यों न हो, मगर अपने बल पर चलकर ही, मैं अिस बातका पता लगा सकूँगा कि आज मैं खुद कहाँ खड़ा हूँ; साथ ही, अिस तरह मैं अीश्वरके बारेमें अपनी श्रद्धाकी भी परीक्षा कर सकूँगा।"

सेवाग्राम आश्रमके अपने साथियोंको अुन्होंने लिखा —

"मेरा खयाल है कि आप लोगोंको मेरे जल्दी ही वापस आश्रम पहुँचनेकी आशा छोड़नी होगी। मुमकिन है कि मैं फिर आश्रम पहुँच ही न पाअूँ। मेरे साथियोंके लिअे भी यही समझिये। यहाँ मेरे सामने भगीरथ काम पड़ा है। मेरी कसौटी हो रही है। मेरी कल्पनाका सत्याग्रह कमज़ोरोंका हथियार है या सचमुचके बहादुरोंका? मुझे या तो यह सिद्ध करना चाहिये कि अहिंसा सच्चे शूरवीरोंका हथियार है, या अिस सिद्धिकी साधना करते-करते मिट जाना चाहिये। जीवन भर मैंने अिसीकी खोज की है। अिसी खोजके सिलसिलेमें मैं आज अिस अुजड़े और वीरान बने गाँवमें गड़ जानेके लिअे आया हूँ। भगवान्‌की जैसी मरज़ी हो वैसा वह करे!"

२० नवम्बरके दिन गांधीजीने क़ाज़ीरखिलवाली अपनी छावनी अुठा दी, और टाअिपिस्टका काम करनेवाले श्री परशुराम व बँगला दुभाषियेका काम करनेवाले प्रोफेसर निर्मलकुमार बसुको साथ लेकर, नअी दुनियाकी तलाशमें निकले हुअे कोलम्बसकी तरह, वे अँधेरेसे भरे अज्ञातके समन्दरमें कूद पड़े। अिस तरह बिछुड़नेसे पहले गांधीजीके साथके छोटेसे दलने मुख़्तसर प्रार्थना की और अुसमें गांधीजीका प्रिय भजन 'वैष्णवजन तो तेने कहीअे' गाया। गाते समय बहुतोंका गला भर आया था। और जब गांधीजीको श्रीरामपुरकी तरफ़ ले जानेवाली अुनकी छोटी-सी डोंगी पुलके अुस पार आँखोंसे ओझल हो गअी, तो बहुतोंकी आँखें भर आअीं।

गांधीजीके चले जाने पर अुनके दलके लोग अेकके बाद अेक अपने-अपने मुकर्ररशुदा गाँवोंके लिअे रवाना हो गये। अिसी अंकमें दूसरी जगह दिये गये नक़शेसे पाठकोंको पता चलेगा कि अुनके कामका दायरा कहाँ तक फैला हुआ है और खुद गांधीजी व अुनके साथी कहाँ-कहाँ बस गये हैं।

श्रीरामपुरके जिस घरमें गांधीजी ठहरे हैं, वह सुपारी और नारियलके बूँचे-बूँचे पेड़ोंके घने झुरमुटके बीच अेक खुले और धूपवाले मैदानमें खड़ा है। अुसके आस-पास चारों तरफ़ आग वग़ैरासे हुअी बरबादी और नुक़सानीके डरानेवाले नज़ारे दिखाअी पड़ते हैं। वहाँ जाते ही गांधीजीने हमेशाकी तरह कुनकुने पानीसे नहाना बन्द कर दिया, और पहले दो दिन तो अपनी मालिश भी खुद ही कर ली। श्रीरामपुर पहुँचनेके बाद शमसुद्दीन साहब और दूसरे कअी लोग गांधीजीसे कअी बार मिले हैं। रामगंजमें वहाँके हिन्दुओं और

www.vinoba.in

मुसलमानोंके क़रीब ३० नुमाअिन्दोंकी अेक कान्फ्रेन्स भी गांधीजीकी हाजिरीमें हो चुकी है। कान्फ्रेसकी चर्चाओंके अन्तमें सबने मिलकर शान्ति क़ायम करने और क़ौमी अित्तहाद बढ़ानेकी अेक योजना तैयार की है। बंगालके वज़ीरोंने पूरी जिम्मेदारीके साथ अिस योजना पर अमल करनेका वादा किया है। २३ नवम्बरके दिन चण्डीपुरगाँवकी आमसभामें यह योजना आम लोगोंके सामने पेश की गअी। सभा खत्म होनेसे पहले गांधीजीने अपने भाषणमें नीचे लिखी मारकेकी बातें कहीं—

"अिस सूबेकी हुकूमत चलानेवाले लोग मुसलमानोंके चुने हुअे नुमाअिन्दा हैं। अुन्होंने आपसे वादा किया है। वे कहते हैं कि आगे कभी अैसी शर्मनाक वारदातोंको हम चुपचाप देखते नहीं रहेंगे। हिन्दुओंको मैं यह सलाह देता हूँ कि आप अिन भाअियोंकी बात पर यक़ीन रखिये और अिनके वादेकी परीक्षा कर लीजिये। अिसका यह मतलब नहीं कि आअिन्दा पूरबी बंगालमें कोअी दुष्ट या बुरा मुसलमान रहेगा ही नहीं। भले-बुरे आदमी तो सभी क़ौमोंमें होते हैं। दग़ाबाज़ीसे या बेअीमानी भरे बरतावसे तो कोअी भी सरकार या कैसी भी संस्था आखिर टूट ही जाती है। . . . अगर आप सच्ची शान्ति चाहते हैं, तो अुसका अेक ही रास्ता है — आप आपसमें विश्वास और अेतबार रखिये। कुछ लोग कहते हैं कि बिहारमें नोआखालीका बदला लिया गया है। फ़र्ज़ कीजिये कि अिसके बाद पूरबी बंगालके मुसलमान या समूचे हिन्दुस्तानके मुसलमान बिहारका बदला लेनेका फ़ैसला करें, तो हिन्दुस्तानकी क्या हालत हो? . . . आखिर बुरे-से-बुरा नतीजा तो यही हो सकता है न, कि आपको अपनी जानसे हाथ धोना पड़े? अुस हालतमें मैं कहूँगा कि आप बहादुर मर्दोंकी तरह मौतका सामना कीजिये! . . . शमसुद्दीन साहब और अुनके साथी जो कुछ कह रहे हैं, वह अुनके दिलकी बात न हुअी, तो आखिर आपको अुसका पता चल ही जायगा। मैं नहीं चाहता कि मुझे जीते जी वह करुण दृश्य देखना पड़े!"

क़ाज़ीरखिल, २४-११-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

पढ़नेवालोंसे—

'हरिजनसेवक'के पढ़नेवाले अब यह तो जान ही चुके हैं कि किन हालतोंमें गांधीजीने 'हरिजन' साप्ताहिकोंके सम्पादनका काम सँभालनेकी जिम्मेदारी श्री विनोबा, काकासाहब कालेलकर, किशोरलाल मशरूवाला और नरहरि परीख पर डाली है। जब तक गांधीजी, प्यारेलालजी और गांधीजीके दलके दूसरे साथी बंगालके हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच फिरसे दोस्ती क़ायम करनेके बहुत ही अहम काममें लगे हैं, तब तकके लिअे अिन चार सज्जनोंसे प्रार्थना की गअी है कि वे मिलकर और अलग-अलग अिस जिम्मेदारीको निबाहें। लेकिन हक़ीक़त यह है कि आज ये चारों अेक-दूसरेसे बहुत दूर हैं, और किसी अेक जगह अिकट्ठा नहीं हो सकते। अकेले श्री नरहरि परीख ही यहाँ साबरमतीमें रहते हैं, और अुनकी मदद मुझे बहुत आसानीसे मिल सकती है। अिसलिअे अिनमेंसे हरअेकके लेख सीधे मेरे पास आयेंगे और ये कोअी छपनेसे पहले दूसरे किसीके लेखों या मजमूनोंको देख नहीं सकेंगे।

आम तौर पर गांधीजी और प्यारेलालजी 'हरिजन'में तब तक कोअी चीज़ छपने नहीं देते, जब तक वे खुद अुसे देख न चुके हों। लेकिन आजकल यह मुमकिन न होगा। अिसलिअे मेहरबानी करके पाठक यह न समझें कि फ़िलहाल अिन साप्ताहिकोंमें किसी मसले पर ज़ाहिर की गअी किसी रायको अुसके छपनेसे पहले गांधीजी या प्यारेलालजी मंजूर कर चुके हैं।

मैनेजिंग अेडीटर

हफ़्तेवार ख़त

फिर वही सबक़

जब चाँदपुरमें हिन्दू कार्यकर्त्ताओंका अेक डेपुटेशन गांधीजीसे मिला था, अुस वक़्त अुन्होंने निडरपनका जो सबक़ सिखाना शुरू किया था, वही चौमुहानीमें और दूसरी जगहोंमें और भी ज़ोरदार लफ़्ज़ोंमें दोहराया गया। सच पूछा जाय तो आजकल अुनकी तमाम बातचीतोंका यही अेक खास विषय बन गया है। चौमुहानीमें अुनसे मिलने आये हुअे अेक दोस्तसे अुन्होंने कहा था — "दुःखकी बात यह नहीं कि अितने सारे मुसलमान पागल बन गये, बल्कि दुःख यह है कि पूरबी बंगालके अितने हिन्दू अिन सब बातोंको देखते रहे। अगर पूरबी बंगालका अेक-अेक हिन्दू मार डाला जाता, तो भी मैंने अुसकी परवाह न की होती। क्या आप जानते हैं कि अैसे वक़्त राजपूत क्या किया करते थे? लड़ाअीके मैदानमें अपनी क़ुरबानी करनेके लिअे रवाना होनेसे पहले वे अपनी औरतोंको मार डाला करते थे। जो बच जाती थीं, वे क़िलेके दुश्मनके हाथमें जानेसे पहले चिता पर चढ़कर अपनी बलि दे देती थीं, ताकि दुश्मन अुन्हें पकड़कर अुनकी बेअिज़्ज़ती न कर सके। हज़ारों मुसलमान मिलकर अपने बीच रहनेवाले मुट्ठीभर हिन्दुओंको क़त्ल कर डालें, तो अुसमें कोअी बहादुरी नहीं। लेकिन यह देखकर दिल फटता है कि अपनी बुज़दिलीकी वजहसे हिन्दू अितने नीचे गिर गये कि अुनके देखते अुनकी औरतें भगाअी गअीं, बेअिज़्ज़त की गअीं, ज़बरन् अुनका धर्म बदला गया और मुसलमानोंके साथ ज़बरदस्ती अुनकी शादियाँ की गअीं, और वे कुछ न कर सके।"

अुन दोस्तने पूछा — "हम हिन्दुओंमें सलामती और आत्म-विश्वासकी भावना कैसे पैदा कर सकते हैं?"

"बहादुरीसे मरना सीख कर। हम अपना ग़ुस्सा अपने अूपर ही अुतारें। पुलिसकी जगह फ़ौजको तैनात करवाने या मुस्लिम पुलिसकी जगह हिन्दू पुलिस रखवानेमें मुझे कोअी दिलचस्पी नहीं। ये सब निकम्मी चीज़ें हैं।"

"हम किससे अपील करें — कांग्रेससे, लीगसे या ब्रिटिश सरकारसे?"

"अिनमेंसे किसीसे नहीं। आप अपने-आपसे, भगवान्‌से अपील कीजिये।"

आखिरमें अुन दोस्तने कहा — "हम मिट्टीके मामूली पुतले ठहरे। हमें किसी ठोस मददकी जरूरत है।"

गांधीजीने जवाब दिया — "तो अपनी मिट्टीसे ही अपील कीजिये। अुसका सारा मैल धो डालिये।"

डरकी तशरीह

क़ाज़ीरखिलमें सोमवार ता० १८ नवम्बरको शामकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीका जो लिखा हुआ सन्देश पढ़ा गया था, अुसमें अुन्होंने डरकी तशरीहका बहुत बारीक़ीके साथ बयान किया था। असलमें आजकल यही अुनकी तक़रीरोंका खास विषय बन गया है। अुन्होंने कहा — "जितना ही मैं अिन हलक़ोंमें घूमता हूँ, अुतना ही मैं यह महसूस करता हूँ कि डर ही आपका सबसे बुरा दुश्मन है। यह डरनेवालों और डरानेवालोंकी जिन्दगीको अन्दर ही अन्दर कुरेदता रहता है। डरानेवाला डरनेवालोंकी किसी चीज़से डरता है। मुमकिन है कि वह डरनेवालेके जुदा मज़हबसे या अुसकी दौलतसे डरता हो। लोभ या लालच अिस डरका ही दूसरा नाम है। अगर आप गहराअीसे अिसकी छान-बीन करें, तो आपको पता चलेगा कि लालच भी अेक तरहका डर है। लेकिन जिसने अपने दिलसे डरको निकाल बाहर किया है, अुसे डरानेवाला न कभी कोअी था, न आगे कभी होगा। निडरको कोअी क्यों नहीं डरा सकता? आप देखेंगे कि भगवान्

www.vinoba.in

हमेशा निडरका साथ देता है। अिसलिअे हमें सिर्फ़ भगवान्से डरना चाहिये और अुसीकी शरण लेनी चाहिये। अुस हालतमें दूसरे सारे डर अपने-आप दूर हो जायँगे। जब तक लोग निडर बनना नहीं सीखेंगे, तब तक यहाँके हिन्दू या मुसलमान कभी शान्तिसे नहीं रह सकेंगे।"

खरी बात

महकमे सिविल सप्लाअिजके वज़ीर ग़फ़रान साहब और महकमा-खेतीके वज़ीर अहमद हुसेन साहब दूसरे कअी पार्लमेण्टरी सेक्रेटरियों और मुस्लिम लीगी दोस्तोंके साथ, निराश्रितोंको फिरसे अुनके गाँवोंमें बसानेकी सरकारी तजवीज़ों पर बातचीत करनेके लिअे १६ नवम्बरकी शामको गांधीजीसे मिले थे। ग़फ़रान साहब नोआखाली जिलेके रहनेवाले हैं और वज़ीर बननेके पहले वहीं पब्लिक प्रॉसिक्यूटरका यानी सरकारी वकीलका काम करते थे। प्रार्थनाके बाद अुन्होंने सभामें तक़रीर करते हुअे कहा—"अिस जिलेमें जो कुछ हुआ, अुससे मुझे और पूरबी बंगालके मुसलमानोंको भी बहुत ही दुःख हुआ है। मैं १६ तारीखसे दंगेवाले हलक़ोंके दौरे पर हूँ, और मैं कह सकता हूँ कि सारी वारदातें १०से १६ नवम्बरके बीच हुअी हैं। अिसमें कोअी शक नहीं कि पूरबी बंगालमें जुल्म और ज़्यादतियाँ की गअी थीं। मेरी यह दिली ख्वाहिश है कि जिन्होंने यह सब किया, अुन गुण्डोंको अदालतके सामने पेश किया जाय। लेकिन मैं नहीं चाहता कि किसी बेगुनाहको कोअी तकलीफ़ हो। मैं पूरबी बंगालके हिन्दुओंको यक़ीन दिलाता हूँ कि जिस तरह कांग्रेस बिहार, यू० पी०, मध्यप्रान्त, मद्रास और बम्बअीके मुसलमानोंको अपने-अपने सूबोंसे निकालकर दूसरी जगह नहीं भेजना चाहती, अुसी तरह बंगालकी लीगी सरकार और मुस्लिम लीग भी यह नहीं चाहती कि हिन्दू पूरबी बंगाल छोड़कर चले जायँ। लीग यह साबित करना चाहती है कि वह हिन्दुओं और मुसलमानोंके साथ अेकसा बरताव करके अिन्साफ़के साथ हुकूमत करना जानती है। जिस पूरबी बंगालमें वे पैदा हुअे और पले हैं, अुसे छोड़नेका विचार वे कैसे कर सकते हैं? हिन्दू और मुसलमान दोनों हमेशा दोस्तोंकी तरह रहे हैं। हिन्दू मुझे 'भैया' और 'चाचा' कहते हैं। तो फिर आज दोनोंमें दुश्मनी क्यों हो? मैं मुसलमानोंकी तरफ़से हिन्दुओंसे प्रार्थना करता हूँ कि वे बिना किसी डरके अपने-अपने घरोंको लौट जायँ। जब हिन्दुओंमें फिर विश्वास पैदा हो जायगा, तो पुलिस और फ़ौज वापस भेज दी जायगी, क्योंकि न हिन्दुओंको और न मुसलमानोंको ही अुनमें कोअी विश्वास है। मैं चाहता हूँ कि मुसलमान हिन्दुओंसे वापस अपने-अपने घरोंको लौटनेकी प्रार्थना करें।"

अिसके बाद कुछ मिनटोंके लिअे तक़रीर रोक दी गअी, क्योंकि नमाज़का वक़्त हो गया था। चौमुहानीकी तरह यहाँ भी सभामें आये हुअे मुसलमानोंने प्रार्थना-सभावाले मैदानके अेक कोनेमें नमाज़ पढ़ी। नमाज़के बाद ग़फ़रान साहब फिर कुछ मिनट तक बोले। अुन्होंने सभामें आये हुअे लोगोंसे कहा कि सरकारकी तरफ़से अिस मतलबका हुक्म जारी किया जा चुका है कि गांधीजीकी सभामें आनेवाले, सभामें बैठे हुअे या सभासे जानेवाले लोगोंमेंसे किसीको गिरफ़्तार न किया जाय।

ग़फ़रान साहबके बाद गांधीजीने अपनी तक़रीर शुरू की। कुछ दिन पहले चौमुहानीमें दिये गये शमसुद्दीन साहबके भाषणका हवाला देते हुअे अुन्होंने कहा—"अबकी आपने ग़फ़रान साहबकी बात सुनी है। आपके ये वज़ीर यह चाहते हैं कि आप सब अेक साथ दोस्त बनकर रहें। पुलिस और फ़ौज आपकी हिफ़ाज़त नहीं कर सकती। अेक भगवान् ही आपको बचा सकता है। अिसलिअे आपको चाहिये कि अपनी सलामतीके लिअे आप अेक-दूसरेका सहारा लें। ग़फ़रान साहबने कहा है कि सरकार नहीं चाहती कि हिन्दू पूरबी बंगाल छोड़कर चले जायँ। अिसमें शक नहीं कि यहाँ बड़ी दर्दनाक वारदातें हुअी हैं। लेकिन जो हुआ सो हुआ। अुसे आप भूल जाअिये। अब आपको नये तौर पर जिन्दगी शुरू करनी चाहिये। जिसने आपकी तरह मुसीबतें अुठाअी हैं, अुसका शक्की बन जाना मामूली बात है। लेकिन आपको अपना शक दूर कर देना होगा। सभामें आये हुअे अेक भाअीने ग़फ़रान साहबकी तक़रीरका जवाब देनेके लिअे मुझसे पाँच मिनटका वक़्त चाहा था। अुन्होंने मुझे बताया कि अुस तक़रीर की कअी बातों को सुधारना ज़रूरी है। लेकिन मैंने अुन भाअीसे कह दिया कि मैं प्रार्थना-सभाको आम बहस-मुबाहिसेकी जगह नहीं बना सकता। सभामें ग़फ़रान साहबने जो कुछ कहा, वह सद्भावनासे और हमारा काम करनेकी ग़रज़से कहा था। लेकिन अगर ये भाअी अदबके साथ अपनी सब बातें अेक ख़तमें लिखकर मुझे दे देंगे, तो मैं अुसे खुशी-खुशी ग़फ़रान साहबके पास पहुँचा दूँगा। मुझे अिस बातका अफ़सोस है कि आप अपने मुसलमान भाअियोंकी नमाज़के वक़्त बिलकुल खामोश न रह सके। हमारी तहज़ीब और खानदानियतका यह तक़ाजा है कि दूसरोंकी प्रार्थनाके वक़्त हम खामोश रहें। हमें अेक-दूसरेके मज़हबकी अिज़्ज़त करनी चाहिये। सभी मज़हबवाले अेक ही भगवान्की पूजा करते हैं। प्रार्थनाके मैदानमें कांग्रेस और लीगके झण्डोंको साथ-साथ अुड़ते देखकर मुझे खुशी होती है। दोनों झण्डोंकी अपनी बड़ी अहमियत है। जैसा कि क़ायदे आज़म जिन्ना साहबने कहा है, आपको यह याद रखना चाहिये कि अगर हिन्दू और मुसलमान आपसमें लड़ते-झगड़ते रहेंगे, तो हिन्दुस्तान हमेशा गुलाम बना रहेगा और पाकिस्तानका कहीं पता भी न चलेगा। मेरे पास धमकीके खत आ रहे हैं। कुछ मुसलमानोंको यह डर है कि मैं अुन्हें दबानेके लिअे यहाँ आया हूँ। मैं अुन्हें अिस बातका यक़ीन दिला सकता हूँ कि मैंने अपनी सारी जिन्दगीमें कभी किसीको नहीं दबाया। लोग मुझसे पूछते हैं कि मैं बिहार क्यों नहीं गया? मैं अपना यह अिरादा जाहिर कर चुका हूँ कि अगर बिहारने अपना पागलपन नहीं छोड़ा, तो मैं अुपवास करूँगा। बिहारकी खबरें मुझे बराबर मिलती रहती हैं। पंडित जवाहरलाल, डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद और दूसरोंने मुझे यक़ीन दिलाया है कि मेरा वहाँ जाना ज़रूरी नहीं। मेरा खयाल है कि अब बिहारमें लगभग शान्ति क़ायम हो चुकी है। तंगदिली अभी मौजूद है, लेकिन वह कम हो रही है। मुसलमान अपने-अपने गाँवोंको लौट रहे हैं। जिन लोगोंके घर बरबाद हो गये थे, अुनके लिअे नये घर बनवा देनेकी जिम्मेदारी सरकारने अपने सिर ली है। हिन्दुओंकी तरफ़से भी मुझे गुस्सेसे भरे तार मिल रहे हैं। वे मुझसे पूछते हैं कि मैंने बंगालकी वारदातोंके लिअे मुसलमानोंके खिलाफ़ अुपवास क्यों नहीं किया? आज मैं अैसा नहीं कर सकता। अगर मुसलमान मुझे अपना दोस्त समझने लगें, तो मैं अुनके खिलाफ़ भी अुपवास कर सकूँगा। अगर मुझे पूरबी बंगाल छोड़कर जाना पड़ा, तो मैं तभी जाअूँगा, जब यहाँके हिन्दुओं और मुसलमानोंके दिलोंमें पूरी-पूरी शान्ति छा जायगी। वरना मैं अेक दिन भी ज़्यादा जीना न चाहूँगा।

दसघड़िया

१७ नवम्बरको सुबह गांधीजीने क़ाज़ीरखिलसे दो मील दूर दसघड़िया गाँवका दौरा किया। वहाँ अुन्हें बहुतसी औरतें मिलने आअीं। अुन सबको जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया था, मगर अब वे फिर अपने धर्ममें लौट आअी थीं। गांधीजीने कहा—"जिला मजिस्ट्रेटने हुक्म जारी करके अिस बातका अैलान कर दिया है कि जबरदस्ती यानी डरकी वजहसे किये गये धर्म-परिवर्तन को क़ानून मंजूर नहीं करेगा। मैं नहीं जानता कि जिन लोगोंका धर्म जबरदस्ती बदल डाला गया था, अुनमेंसे हरअेक फिर हिन्दू धर्ममें ले लिया गया है या नहीं। अगर अभी तक अैसा न हुआ हो,

www.vinoba.in

तो अब होना चाहिये, बशर्ते कि आप दोनों जातियोंके बीचकी मौजूदा कड़वाहट को भाओीचारेमें बदलना चाहते हों ।

"कुछ भगाओी हुओी लड़कियाँ अभी तक नहीं मिली हैं । वे अब जल्दी ही लौटा दी जानी चाहियें । आज दोपहरको अेक धोबी अपने अेक बरसके लड़केको लेकर मेरे पास आया था । पुलिसकी मदद लेकर अेक मुसलमानके घरसे वह अिस बच्चेको अेक महीने बाद छुड़ा पाया था । मुसलमान भाअियोंका फ़र्ज है कि वे अैसी कार्रवाअियाँ न होने दें । अुन्हें अपनी पिछली गलतियोंको साफ़ दिलसे क़बूल करना चाहिये और आअिन्दा वैसी गलतीसे बचनेका वचन देना चाहिये । जो अपनी गलतियाँ छिपानेकी कोशिश करता है, वह अुन्हें कभी दुरुस्त नहीं कर सकता । मैं खुद सत्यका पुजारी हूँ । जिन दिनों मैं वकालत करता था, मैंने अपने मुवक्किलोंसे कह रक्खा था कि अगर आप मुझे अपना वकील बनाना चाहते हैं, तो आपको मुझसे सारी बातें सच-सच कहनी होंगी । मैं झूठे मामलेकी पैरवी नहीं करूँगा । नतीजा यह हुआ कि सच्चे और खरे मामले ही मेरे पास लाये जाते थे । मैं अेक लम्बे अरसेसे अपनी वकालत छोड़ चुका हूँ, और राजद्रोहके जुर्ममें मेरा नाम भी बैरिस्टरोंकी फ़ेहरिस्तसे खारिज कर दिया गया है । लेकिन मैं अपने अुसी अुसूलको मानता रहा हूँ । हिन्दुओं और मुसलमानोंको मेरी यही सलाह है कि आप अपने दिलके सारे पाप धो डालें । अिसके बिना आप न तो शान्तिसे रह सकेंगे और न अेक-दूसरेकी अिज़्ज़त कर सकेंगे ।"

अेक घटना और अुसका नतीजा

गफ़रान साहबने जिस प्रार्थना-सभामें तक़रीर की थी, अुसमें कही गअी गांधीजीकी बातोंका कुछ अजीब-सा असर हुआ । १७ नवम्बरको शामकी प्रार्थना-सभामें कोअी बहन शरीक न हुअी; और हिन्दू भी बहुत कम तादादमें आये । अुस दिन सभामें ज़्यादा तादाद मुसलमानोंकी ही रही । प्रार्थनाके बाद गांधीजीने अपने भाषणमें कहा — "मैंने सुना है कि चूँकि मैंने अेक भाअीको गफ़रान साहबकी बातोंका जवाब अुसी वक़्त और वहीं देनेकी अिजाज़त नहीं दी, अिसलिअे हिन्दू मुझसे नाराज हो गये हैं और अुन्होंने प्रार्थना-सभाका बहिष्कार कर दिया है । मुझे अिसका कोअी दुःख नहीं । मैं दूसरोंको ख़ुश करनेके लिअे ही कभी कोअी बात कहता या करता नहीं । मैंने हमेशा यही सिखाया है कि अिनसानको अपना फ़र्ज अदा करते समय अिस बातकी परवाह न करनी चाहिये कि दूसरों पर अुसका क्या असर होगा । जो अिनसान हमेशा अपने अक़ीदेके मुताबिक़ काम करता है, वह दूसरोंसे कभी नहीं डरता ।"

बादमें मुक़ामी रिलीफ़ कमेटीके सेक्रेटरीने आकर गांधीजीसे कहा कि हमने प्रार्थना-सभाका बहिष्कार नहीं किया है । लेकिन चूँकि आज अितवारका बाज़ार था और अुसमें बहुतसे मुसलमानोंके साथ गुण्डोंके आनेका अँदेशा था, अिसलिअे बहनें डरकर घरसे बाहर न निकलीं ।

१९ नवम्बरको मधुपुरकी प्रार्थना-सभामें तक़रीर करते हुअे गांधीजीने कहा — "अेक भाअीने मुझे बताया है कि यह सफ़ाअी अेक बहाना ही थी । अगर अुन्होंने सभाका बहिष्कार भी किया हो, तो मुझे अिसकी परवाह नहीं । अिसके लिअे अुन्हें मुझसे माफ़ी माँगनेकी ज़रूरत नहीं । और, अगर वे डरकी वजहसे सभामें नहीं आये, तो सचमुच ही अुन्हें मुझसे कोअी माफ़ी न माँगनी चाहिये । लेकिन अिस तरह डरना अुनके लिअे शर्मकी बात है । क्या मर्द भी अितने बुज़दिल थे कि वे डरकी वजहसे सभामें नहीं आये? क्या मुसलमान अुन्हें खा जाते? अगर वे अितने कायर या बुज़दिल हैं, तो वे अिस मुल्कमें रहनेके लायक़ नहीं । मधुपुरमें बहनोंकी अेक सभा करनेका प्रस्ताव लेकर आज सुबह जो बहन मेरे पास आअी थीं, अुन्होंने मुझसे तीन सवाल पूछे थे । पहला सवाल यह था कि हमारी सारी कोशिशोंके बावजूद भी हम भगाअी हुअी औरतोंमेंसे कुछको अभी तक छुड़ा नहीं सके हैं । मैंने अुनसे कहा कि वे अपनी शिकायत मुझे लिखकर दे दें, तो मैं अुसे शहीद सुहरावर्दी साहबके पास भेज दूँगा । वैसे मैं बड़े वज़ीरको सीधे भी लिख सकता हूँ । अिस मामलेमें ज़रा भी देर न होनी चाहिये । अुनकी दूसरी बात यह थी कि गाँवोंमें कुछ औरतें अैसी हैं, जो वापस आना चाहती हैं, मगर अिसके लिअे वे फ़ौजी मददकी अुम्मीद रखती हैं । लेकिन मैं अिसमें अुनका साथ नहीं दे सकता । मैं आपके बड़े वज़ीरसे साफ़-साफ़ कह चुका हूँ कि मुझे अुनकी पुलिस और फ़ौजका कोअी मोह नहीं । वे किसी भी वक़्त अुन्हें हटा सकते हैं । अगर हिन्दू और मुसलमान अेक-दूसरेका सिर तोड़ना चाहें, तो अुन्हें अिसकी पूरी आज़ादी होनी चाहिये । मैं अिसे सह लूँगा । लेकिन अगर अपनी मददके लिअे आप पुलिस और फ़ौजका मुँह ताकते रहे, तो याद रखिये कि आप हमेशाके लिअे गुलाम बने रहेंगे । जो लोग आज़ादीके मुक़ाबले सलामतीको ज़्यादा पसन्द करते हैं, अुन्हें जीनेका कोअी हक़ नहीं । मैं चाहता हूँ कि हमारी बहनें बहादुर बनें । ज़ोरो-ज़ुल्मकी धमकियोंसे डरकर बदला गया धर्म सच्चा धर्मान्तर नहीं, बल्कि बुज़दिली है । डरपोक मर्द या औरत किसी भी मज़हबके लिअे बोझरूप है । आज मारे डरके वे मुसलमान बन जायँगे, कल अीसाअी और परसों किसी तीसरे मज़हबमें चले जायँगे । यह चीज़ अिनसानोंको शोभा नहीं देती । पुरुष कार्यकर्त्ताओंको बहनोंसे कह देना चाहिये कि हम आपके रक्षक हैं और जान देकर भी आपकी हिफ़ाज़त करेंगे । अगर अितने पर भी बहनें बाहर आनेसे डरें, तो अुनकी कोअी मदद नहीं की जा सकती । मैं पुकार-पुकारकर यह कहने आया हूँ कि बहनोंको या तो बहादुर बनना होगा या मरना होगा । आज जो मुसीबत अुन पर आ पड़ी है अुससे फ़ायदा अुठाकर अुन्हें अिस डररूपी राक्षसको अपने दिलोंसे निकाल भगाना चाहिये ।" अख़ीरमें अुन बहनने पूछा कि हम निराश्रितोंको घर लौट जानेकी सलाह कैसे दें ? गांधीजीने जवाब दिया — "मैं अुन्हें पुलिस या फ़ौजकी हिफ़ाज़तमें वापस जानेकी सलाह नहीं दे सकता । वे मुसलमानोंसे डरकर भाग आये थे । अिसलिअे मुसलमानोंको आगे बढ़कर अुन्हें यक़ीन दिलाना चाहिये कि हम आपको अपनी ही मातायें, लड़कियें और बहनें समझेंगे, और अपनी जान देकर भी आपकी हिफ़ाज़त करेंगे ।"

गांधीजीने आगे कहा — "हरअेक मर्द या औरतको किसी बाहरी दस्तन्दाज़ीके बिना अपने धर्ममें रहनेका हक़ है, होना चाहिये । सब लोग अलग-अलग नामोंसे अेक ही भगवान्की पूजा करते हैं । अगर मैं अिस पेड़में अपने भगवान्को देखता हूँ और अिसलिअे अिस पेड़की पूजा करता हूँ, तो मुसलमानोंको अुस पर कोअी अेतराज क्यों होना चाहिये ? अगर कोअी यह दावा करता है कि अुसका भगवान् दूसरोंके भगवान्से श्रेष्ठ है, तो वह गलती करता है । भगवान् तो सबका अेक ही है । अिसीलिअे मैंने यह तरीक़ा सुझाया है कि हरअेक गाँवसे अेक भले हिन्दू और अेक भले मुसलमानको आगे आकर गाँवमें अमन और शान्ति बनाये रखनेकी गारण्टी देनी चाहिये । तभी मैं निराश्रितोंको अपने-अपने घर लौटनेकी सलाह दूँगा । आपके वज़ीरोंको भी मेरा यह सुझाव पसन्द आया है ।"

क़ाज़ीरख़िल, २४-११-४६

(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

भूल-सुधार

२४-११-४६ के 'हरिजनसेवक' में पृष्ठ ४०३ पर छपे 'पतिके लिअे कातनेवाली' लेखके आख़िरी पैरेमें 'सुरातिया' के बदले 'सुरातिया' पढ़िये ।

www.vinoba.in

माँकी वेदना

अेक माँ थी। धर्ममें बहुत श्रद्धा रखती थी। दिन निकलते ही वह गाँवके हरअेक मन्दिरमें जाती, और अुसके सामने सिर झुकाती। गिरजाघर और मसजिदके पाससे भी गुजरती और वहाँ भी अपना सिर झुकाती। अुसने अपने घरमें तरह-तरहके पत्थर, काँचके मणि, सिक्के, और धातुकी मूर्तियाँ वगैरा चीजें अिकट्ठा की थीं। अिन सबको अुसने अपने पूजाघरमें रख दिया था, और अिन्हें देव समझकर वह अिन सबकी पूजा करती थी। अगरचे अिस तरह वह बहुतसे देव-देवियोंकी पूजा करती थी, फिर भी अुसके दिलमें अेक धुँधला-सा मगर पक्का विश्वास यह भी था कि अिन सब देवोंके पीछे अेक ही बड़ा देव है, जो भलाअी और प्रेमसे भरा हुआ है। और अुसके दिलमें मौतके बादकी जिन्दगीका भी कुछ धुँधला चित्र अुठता था। अलबत्ता, अुसकी यह श्रद्धा और ये कल्पनाअें बहुत साफ़ न थीं, और अुन्हें जबानसे कहना अुसके लिअे और भी मुश्किल था, फिर भी वे अुसे श्रद्धा, आशा, प्रेम, मुसीबतें सहन करनेकी हिम्मत, अपना फ़र्ज़ अदा करनेकी ताक़त, और नेकचलनी व वफ़ादारीसे जिन्दगी बसर करनेका धैर्य देती थीं।

माँ के बहुतसे बेटे, पोते और परपोते थे। अुन सबको अुसने प्रेमसे पाला था, और वे सब माँके धर्मकी हवामें बड़े हुअे थे। अुनमेंसे कुछ तो अपनी माँकी तरह ही भोले भावसे भगवान्‌में श्रद्धा रखनेवाले थे, और धर्मकी लम्बी-चौड़ी बातोंमें कभी न पड़ते थे। लेकिन बहुतसे बच्चे 'पंडित' बन गये थे, और तरह-तरहके मजहबों और फ़िलॉसफ़ियोंके गुरुओं और मन्दिरों व मठोंके आचार्यों और महन्तोंके परिचयमें आये हुअे थे। चुनाँचे, अुनमेंसे कअी अपनेको शैव, कअी वैष्णव, कअी जैन कहते थे; कअी अेक देवको मानते, कअी तीन देवोंको मानते और कअी बहुतसे देवोंको; अुनमेंसे कुछ अीसाअी और मुसलमान भी बन गये थे। माँके कुछ बेटे मूर्तिपूजामें विश्वास रखते थे, और कुछ अुससे नफ़रत करते थे। अुनमें कुछ अैसे भी थे, जो .खुदाकी हस्तीसे अिनकार करते थे, और प्रकृति या .कुदरतको ही आखिरी चीज़ समझते थे। लेकिन वे सब 'मजहबी खयाल'के थे। और अिसमें अचरजकी बात यह थी कि कअियोंकी मजहब-खयालीका अेक नतीजा यह हुआ था कि जितनी अुनकी मजहब-खयाली बढ़ती थी, अुतने ही वे अपने रोज-ब-रोजके आपसी बरतावमें बुरे और अिनसानियतमें कम होते जाते थे। और, अुनमें जो लोग मजहबी मामलोंमें बहुत चुस्त थे, वे बार-बार धर्मकी चर्चायें छेड़ते थे, और अिस बातकी बहस करते थे कि कौनसे सिद्धान्त व अुसूल, पूजाकी कौनसी विधियाँ, और जीवनका कौनसा ढंग सच्चा है। कभी-कभी अिन चर्चाओंमें अितनी गरमी पैदा हो जाती थी कि बात आपसी तू-तू, मैं-मैं और मार-पीटतक पहुँच जाती थी। बात यह थी कि अपने खास मजहबी फ़िरक़ेकी सचाअी, बे-भूली और पूर्णतामें जिसका जितना विश्वास बढ़ता जाता, अुतना ही वह दूसरे फ़िरक़ोंको माननेवाले अपने भाअी-भतीजोंको बरदाश्त करनेकी ताक़त खोता जाता था।

हरअेक लड़का अपनी माँको अपने धर्मके सिद्धान्त समझानेकी कोशिश करता और चाहता कि माँ .खुद अुसे अपना ले और दूसरे बेटोंको भी अुसमें शरीक होनेके लिअे फरमाये। लेकिन भोली माँ जवाब देती — "बेटा, मैं बूढ़ी और बेसमझ हूँ। मुझे अपने रास्ते जाने दो, और तुम सब भी अपने-अपने दिलके रास्ते पर चलो। मेरी अेक बात मानो। नेकचलन और वफ़ादार रहो, अपने भाअी-भतीजों पर मुहब्बत रखो, और अुनके खयालोंकी भी वैसी ही अिज़्ज़त करो, जैसी .खुद अपने खयालोंकी करते हो। अगर अैसा करोगे, तो तुममेंसे हरअेकका भला ही होगा।"

लेकिन जैसे-जैसे वक़्त गुज़रता गया, अपने-अपने फ़िरक़ेके अभिमानमें ये भाअी अपना रिश्ता भूलने लगे और अेक-दूसरेको पराया और दुश्मन समझने लगे। चुनाँचे आपसकी तू-तू, मैं-मैं और मार-पीट भाअी-भाअीके बीचकी लड़ाअी और क़त्लमें बदल गअी, और हरअेक बेटा दूसरे धर्मको माननेवाले अपने भाअियों और भतीजोंको नाबूद करने या अुन्हें जबरदस्ती अपने धर्ममें लानेकी कोशिश करने लगा।

अिस तरह अपने भाअी पर .जुल्म करके अेक बेटा अपनी माँके पास जाता और ग़रूरके साथ कहता — "देखो माँ, मैंने सत्य धर्मकी रक्षा और प्रचारके लिअे अपने अिस भाअीके बेटों और पोतोंका बड़ी .खूबीके साथ नाश किया है; क्योंकि मैं मानता हूँ कि .खूनके रिश्तेसे हक़ या सत्य कहीं बढ़कर है।" वह अुम्मीद करता कि अुसकी बात सुनकर माँ अुसे मुबारकबादी देगी, और अुसकी धार्मिकता की सराहना करेगी। लेकिन माँ अपने प्यारे बच्चोंके क़त्लकी बात सुनते ही रो पड़ती। वह अपने अिस बेटेकी हैवानियत और बेरहमी पर नफ़रत दिखाती।

तब माँका रोना-पीटना और अुसकी सख़्त-सुस्त बातें सुनकर दूसरे बेटे और अुनके बच्चे समझते कि मानो अिस तरह माँने अुन्हें अिसका बदला लेनेकी ही अिजाजत दी है। और, वे अपने जालिमके बेटों-पोतों पर वैसे ही जुल्म गुजारते, और खुशियाँ मनाते हुअे माँके सामने अपने क्रूर कामोंका बयान करते। वे मानते कि माँ अुनकी बात सुनकर अुन्हें शाबाशी देगी।

लेकिन माँ तो फिर रो पड़ती और अिन नये जालिमोंको भी फटकारती। क्योंकि वह तो दोनों तरफ़के मरनेवालों और मारनेवालोंकी अेकसी माँ थी, और वह अुनमेंसे किसीको भी खोनेके लिअे राजी न हो सकती थी। अिन सब बातोंसे अुसे बहुत रंज होता, और अपने बेटोंके अिन बुरे कामोंकी वजहसे खोअी हुअी अपनी शान्तिको फिरसे पानेके लिअे वह रोजा रखती और प्रार्थनापूर्वक, करुण भावसे अपने अीश्वरकी शरण खोजती।

अगर माँकी यह भावना हो, तो अिसमें ताज्जुब क्या? केवल हिन्दू या केवल मुसलमान, या विचारमें राष्ट्रवादी लेकिन दिलकी गहराअीमें जातिवादी कांग्रेसजनकी हैसियतसे आप अेक फ़िरक़े द्वारा दूसरे पर किये गये अत्याचारोंके प्रति पारी-पारीसे अपना गुस्सा या सन्तोष दिखा सकेंगे, और फ़िरक़ेवाराना संगठनका विचार कर सकेंगे। लेकिन अेक मिनटके लिअे यह खयाल कीजिये कि हमारा यह गुस्सा और सन्तोष, यह फ़िरक़ेवाराना ग़रूर देखकर और ये नारे सुनकर माँको क्या लगता होगा? आप अुसकी नज़रसे अपनी नज़र मिलाअिये, आप देखेंगे कि वह रो रही है और अेक गहरे दुःखमें डूबी हुअी है।

अगर आप अिस माँकी कल्पना नहीं कर सकते, तो आप गांधीजीकी आँखों और अुनके दिलकी तरफ़ देखिये; वहाँ आपको माँकी वेदनाके दर्शन होंगे।

वापी, २४-११-'४६ **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

विषय-सूची

			पृष्ठ
मालवीयजी महाराज	...	गांधीजी	४१७
लोकहितको 'लाअिफ-क्लीयर' दीजिये	...	काका कालेलकर	४१७
नक़शा	...		४१९
"करेंगे या मरेंगे" मिशन	...	प्यारेलाल	४२०
हफ़्तेवार खत	...	प्यारेलाल	४२१
माँकी वेदना	...	किशोरलाल मशरूवाला	४२४
टिप्पणी			
पढ़नेवालोंसे	...	मैनेजिंग अेडीटर	४२१

www.vinoba.in